Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

REVIEW ARTICLE

अज्ञेय की कहानियों में जीवन मूल्य

www.ignited.in

अज्ञेय की कहानियों में जीवन मूल्य

Dr. Rekha Rani Zood

Assistant Professor (Hindi), Babu Anant Ram Janta College of Education, Kaul (Kaithal)

---------------------------------x---------------------------------

कहानी जीवन के भोगे हुए अनुभूत सत्य के क्षणों का प्रतिबिम्ब देती है। कहानी छोटी सी घटना के माध्यम से जो कौंध, जो तड़पन, जो पीड़ा और जो उद्वेलन छोड़ जाती है, वह अध्येता के मन मस्तिष्क में मूल्य बनकर अमिट हो जाते हैं। अज्ञेय की कहानियों में जीवन मूल्यों के लिए ही श्रम किया गया है। उनकी लेखनी जीवन मूल्यों के लिए ही संघर्ष करती है, मूल्यों को ही तराशती है और मूल्यों की ही स्थापना करती है।

अज्ञेय के कथा–साहित्य में जीवन मूल्य सहजता से देखने को मिल जाते हैं। रचनाकार अज्ञेय की कुल 67 कहानियों में विभिन्न प्रकार के परिदृश्य परिकल्पनाए उभरकर सामने आयीं हैं। आज समाज में विभिन्न मूल्यों (मानवीय, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक) का पतन हो रहा है। इन विषयों को रचनाकार अज्ञेय ने बड़ी सतर्कता से उकेरा है। पर्दे के आड़ में हो रहे अनैतिक कृत्य कब तक छुपे रहेंगे निश्चय ही वे लेखनी के माध्यम से समाज के सामने आयेंगे।

आज एक–दूसरे में विश्वास की कमी हो गई है, कथनी –करनी में अन्तर आ गया है। हम बाहर से कुछ और अन्दर से कुछ और दिखते हैं। प्रदर्शन चाहे जिस क्षेत्र में हो हमारी अभिन्न वस्तु बन गई है। आज के बढ़ते अत्याचार (चोरी, लूट, डकैती, शोषण, बलात्कार, मानसिक अस्थिरता, दल–बदल) जब अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाएं, तब रचनाकार अज्ञेय चुप कैसे रहें? तभी तो ये विषय अज्ञेय की कहानियों में विषय वस्तु बनकर सामने आए हैं।

रचनाकार अज्ञेय समाज के गिरते जीवन मूल्यों पर चिन्तित हैं। इन मूल्यों को यथावत बनाए रखने के लिए वे अपनी लेखनी के माध्यम से सामान्य जनमानस को, समाज को, देश को, मानो झकझोर डालना चाहते हों। सबके सामने एक प्रश्नचिन्ह लगातें हैं, ऐसा क्यों? ऐसा कब तक? विचारशील चिन्तक अज्ञेय व्यक्ति चरित्र, घटना और देश काल को केवल स्थूल नजरिये से नहीं देखते, वे पात्रों के अन्तस्थल में प्रवेश करतें हैं और घटना विधान को मन ही मन भोगते हैं, कभी अनुप्राणित होतें हैं, तो कभी आह्लादित होतें हैं, तो कभी विषाद वितिष्णा और विरक्ति से उत्पन्न मूल्यों को टटोलते हैं। ये मूल्य जीवन की यथार्थ स्थिति को रूपायित करते हैं। मूल्य आदर्शों की तलाश भी करते हैं।

1. मानवीय मूल्य :

अज्ञेय की कहानियों में मानवीय मूल्य पग–पग में विद्यमान हैं। वे दानव को मानव और मानव को महामानव बनाना चाहते हैं। वैयक्तिक कमियों को चुपके से खींच लेना चाहते हैं, वे मानव को मानवता की ओढ़नी के साथ समाज के सामने रखना चाहते हैं। मनुष्य गलती करता है, किन्तु जब उसे अपने अपनत्व का बोध होता है कि इस संसार में मैं क्या हूं ? मेरा क्या अस्तित्व है, तब उसका सुधारात्मक उपाय खोजता है। अज्ञेय की 'सेव और देव' नामक कहानी में लड़का सेव चुराता है। प्रोफेसर साहब देव चुराते हैं, किन्तु जब प्रोफेसर साहब को अपने अस्तित्व का बोध होता है, उस समय उन्हें स्वयं यह लगता है कि यह कार्य मैंने गलत किया है। जब तक वे मूर्ति मन्दिर में वापस नहीं रख देते, तब तक उन्हें आत्मसंतोष नहीं मिलता, मनः शान्ति नहीं मिलती। ''इसने तो सेब ही चुराया, तुम देव स्थान लूट लाये। सहमे हुए स्तब्ध से प्रोफेसर साहब क्षणभर खड़े रहे, फिर धीरे–धीरे उलटे पांव गांव की ओर चल पड़े। ....अंधेरा होते–होते वे मन्दिर पर पहुंचे। किवाड़ एक ओर पटककर उसने मूर्ति को यथा स्थान रखा।''1

'कैसॉड्रा का अभिशाप' नामक कहानी में अज्ञेय की लेखनी मानवता का पक्ष लेती हुई लिखती है– ''....................यहां वे लड़के भी हैं, जो अपने माता–पिता का पेट भरने–माता–पिता के पेट का खालीपन कम करने को वह भी करने को तैयार हैं, जिसके विरूद्ध समस्त मानवता चिल्लाती है।''2

आज पश्चिमीकरण के अंधानुकरण में व्यक्ति अपने सारे रिश्तों संबंधों से दूर हो रहा है, वह आधुनिक बनना चाहता है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमारे मानवीय मूल्य धराशायी हो रहे हैं। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर नष्ट हो रही है। मानव वैज्ञानिक हो रहा है, रोज ही कुछ न कुछ प्रयोग किये जाते हैं, आविष्कार किए जाते हैं। इन आविष्कारों के द्वारा उसकी सुविधाएं बढ़ी हैं। व्यक्ति सुविधा सम्पन्न हो गया है। फिर भी सुखी नहीं है, वह पहले से भी अधिक व्यस्त दिखता है। मानवता के ह्रास से व्यक्ति और समाज में एक अलग तरह की समस्या पैदा हो गई है। उसका अधिकांश समय प्रदर्शन, बनाव–ठनाव, कोर्ट–कचहरी की गैलरियों में बीतता है। अमानवीय कृत्यों के दुष्परिणामस्वरूप कागजी घोड़े दौड़ते हैं। अज्ञेयजी ने 'आत्मपदेन' में लिखा है– ''व्यक्ति के शोध के परित्याग के बाद मानव का शोध संभव नहीं रहता। मानव एक सत्य है, मानवता केवल एक उद्भावना।''3

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अज्ञेय की कहानियों में मानवीय मूल्यों का निदर्शन है, साथ ही गिरते मानवीय मूल्यों के प्रति क्षोभ भी है। रचनाकार उन सभी को चेताना चाहता है, फटकारता है, जो मानवीय मूल्यों को आघात पहुंचाने में सहायक हैं।

www.ignited.in

2. सामाजिक मूल्य :

व्यक्ति की प्रगतिशीलता और उत्कर्ष यात्रा की परिणति है, सामाजिक भावना। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में जन्म लेता है, समाज में पलता है, समाज के बीच वह कार्य करता है, समाज के लिए करता है और अन्त में समाज के बीच में ही उसकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है। अरस्तू ने तो समाज की विवेचना में यहां तक कह डाला है कि– ''व्यक्ति समाज से अलग नहीं रह सकता, जो समाज से अलग है, वह या तो पशु है या देवता।''4

सामाजिक मूल्य के संदर्भ में रचनाकार की लेखनी से प्रस्फुटित कुछ अंश देखिए – ''अजीब प्राणी है– मानव। कौए तक को जब रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ दिखता है, तो वह उसे उठाने से पहले कॉव–कॉव करके अपनी बिरादरी को जुटा लेता है और एक मानव है कि अच्छी चीज देखकर सबसे पहले यह सोचता है कि किस–किस को इससे वंचित रख सकता हूं या बहिष्कृत कर सकता हूं............. ।''5

अज्ञेय का समाज बौद्धिकतावाद से उत्पन्न कुंठाओं, मानसिक विकृतियों से संघर्ष करता है। अतः अज्ञेय की कथाओं में चित्रित सामाजिक मूल्य, ग्रामीण मूल्य कम है। नगर की समस्याओं से सम्बद्ध मूल्य अधिक हैं। सामाजिक मूल्यों में धर्म का छद्म, आचरण का आडम्बर, चरित्र का दोगलापन, नकली मुखौटे का निदर्शन, ऐसे तत्व हैं, जो प्रतिगामी मूल्यों को उजागर करतें हैं।

अज्ञेय की कहानियों में कुंठा, अतृप्ति, निराशा और पलायन के चित्र कहीं परिलक्षित होतें हैं, जो तात्कालिक समाज की मनःस्थिति के ही परिचायक है। अज्ञेय के बौद्धिक व्यक्तित्व के धरातल पर तो सर्वथा ऐसे ही मूल्य निर्मित होते दिखते हैं, जो एक समग्र मानव के शील समाज के लिए उपादेय हैं।

कोई भी रचनाकार अपने युग के प्रभाव से नहीं बच सकता। व्यक्तित्व का विकास समाज के भीतर रहकर ही हो सकता है, वह अपने वातावरण और परिवेश को एकदम अस्वीकार नहीं कर सकता। या तो वह उस समाज और परिवेश के यथार्थ को अपनी कृतियों को आधार बनाएगा या उस यथार्थ से पर उठकर एक से अधिक समुन्नत समाज और परिवेश की कल्पना करेगा। पहली स्थिति में वह यथार्थवादी कहलाएगा और दूसरी स्थिति में आदर्शवादी। सच तो यह है कि रचनाकार को अपने समाज के यथार्थ और आदर्श के बीच से अपना मार्ग निकालना होता है। श्रेष्ठ साहित्यकार जीवन के समीक्षक होते हैं, फलतः उनकी रचनाओं में यथार्थ जीवन का चित्रण मात्र नहीं होता। उस चित्रण के भीतर जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण की पहचान भी रहती है।

3. सांस्कृतिक मूल्य :

अज्ञेय यायावरी वृत्ति के ऐसे साहित्यकार हैं, जिसमें एक ओर घुमक्कड़ी वृत्ति है, तो दूसरी ओर व्यापक दृष्टि भी है। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक मूल्य विविधवर्णी एवं बहुआयामी है। भारत संस्कृति प्रधान देश है। यहां विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का संगम स्थल है। प्राचीन समय में भारत में वैदिक संस्कृति थी। यह विश्वास किया जाता है कि दक्षिण भारत की कुछ आधुनिक जनजातियों के पूर्वज प्रगैतिहासिक काल में उत्तर पश्चिम से भारत आए थे। आध्यात्म की भारत में अलग पहचान है। पहले आध्यात्म को भारत की पोगापंथी एवं रूढ़िवादिता मानते थे, किन्तु लोग जब विज्ञानवाद, थोथी आधुनिकता, बनावटी दुनिया से ऊब चुके, तब उनका झुकाव आध्यात्म की ओर हुआ। देश–विदेश से भारत के आध्यात्मिक रहस्य को समझने के लिए लोग भारत आने लगे। भारत की सुख, शान्ति, मर्यादायें, परम्परायें, बन्धन, लोक व्यवहार से वे दंग होते हैं और अनुकरण करते हैं।

'बदला' नामक पूरी कहानी में धार्मिक चिन्तन एवं समाज में हो रहे अत्याचार का पर्दा लेखक ने उकेरा है। 'शरणदाता' कहानी में जातिगत एवं धर्मगत भावनाओं को समाहित किया है। धर्म एवं संस्कृति किसी देश की व्यवस्था का नियामक है। इसके अनुरूप उस देश के निवासियों का वैचारिक प्रतिरूप बनता है। स्थानीय संस्कृति के अनुरूप वहां की कला, साहित्य का निर्माण होता है। संस्कृति स्थान विशेष के निवासियों की उत्थान–पतन का कारण बनती है। धर्म एवं संस्कृति के आधार पर पारिवारिक वातावरण का निर्माण होता है। अज्ञेय की कहानियों के पात्रों में आस्तिकता, भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रति अनुराग है, उनकी अनेक कहानियों में यह परिलक्षित होता है कि संसार में जो हो रहा है, वह जगत नियंता के इशारे पर हो रहा है। व्यक्ति एक माध्यम है। 'पगोड़ा वृक्ष' कहानी की नायिका 'सुखदा' के संबंध में अज्ञेय ने लिखा है–

''उसके भीतर एकाएक ही कुछ जाग उठा या कुछ टूट गया। जिस प्रकार उन्मन्त व्यक्ति के ऊपर ठंड! पानी पड़ने से उसका खुमार एकाएक टूट जाता है – या उसकी चेतना जाग उठती है।''6 सुखदा के समान मानसिक उद्दीपन 'शत्रु' नामक कहानी में 'ज्ञान' को भी हुआ था। यह अचानक मानसिक उद्दीपन कोई साधारण बात नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रेरणा है। रचनाकार व उसके पात्रों का तादात्म्य जगत नियंता से है, यह स्पष्ट है।

कथाकार अज्ञेय स्वयं भारतीय संस्कृति के उपासक थे, इसलिए सांस्कृतिक तादात्म्य उनकी कहानियों में मिलता है। अज्ञेय की प्रवृत्ति के अनुरूप यदि विचार करें, तो वे संस्कृति की पुरातन वादिता को आख मूंदकर आत्मसात नहीं कर लेना चाहते, बल्कि आंख खोलकर भलीभांति देख–परखकर सोच समझकर गुण–दोषों के आधार पर सांस्कृतिक मूल्यों का प्रक्षेपण करते हैं। मूल्य कहीं घटनाओं के माध्यम से, तो कहीं पात्रों के मुख से निःश्रित होते हैं, तो कहीं स्वतः कहानीकार अज्ञेय मूल्यगत तथ्य कह डालते हैं। कहानियों की रचना सांस्कृतिक मूल्यों को विश्लेषित करने के लिए सोद्देश्य है।

4. राष्ट्रीय मूल्य :

अज्ञेय जी राष्ट्रीय मूल्यों के चिन्तक हैं। उनकी न केवल कहानियां वरन् उपन्यास, कविता संग्रह एवं यात्रावृत्तान्त सभी में राष्ट्रीय मूल्य सहजता से विद्यमान हैं। पात्रों का रूख उनकी अभिव्यक्ति व क्रियाकलाप भी राष्ट्रीय है। 'शत्रु' नामक कहानी में 'ज्ञान' नाम का पात्र संसार का नेता बनकर सामने आता है और समाज का प्रतिनिधित्व करता हैं।

''ज्ञान मैंने तुम्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर संसार में भेजा है। उठो संसार का पुनर्निर्माण करो। ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा संसार अंधकार में पड़ा है। और मानव जाति उस अंधकार में पथ भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो मानव जाति को पथ पर लाना होगा, अंधकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उसके शत्रु से युद्ध करना होगा।''7

www.ignited.in

इसी प्रकार 'हरसिंगार' नामक कहानी में जीवन की यथार्थता देखी जा सकती है– ''गोविन्द सोचने लगा, पच्चीस साल से वह भीख मांग रहा है, शायद पच्चीस साल और मांगता रहेगा। यही सत्य है, यही यथार्थ है। बीस वर्ष पहले एक क्षण आया था, आज बीस वर्ष बाद फिर आया, जिसमें उसने इस अनाथ जीवन की सारी कटुता, कठोरता विषाक्त निस्सहायता का अनुभव किया, पर वह अनाथ ही है, अब अनाथ ही रहेगा। अनाथ जीवन की वासनाओं, पीड़ाओं संघर्षों अधियारी घटनाओं से अनाहत और अक्षुण्ण रहने वाली प्रकाण्ड शून्यता को भरने के लिये कुछ भी नहीं होगा।''8 आज हम सब आजादी की वर्षगांठ मनाते हैं, कहने को तो स्वतंत्र हो गए हैं, आजाद हो गए हैं, किन्तु स्वतंत्रता के पीछे परतंत्रता आज भी ओढ़नी ओढ़कर दामन छिपाये खड़ी है। फिर कैसी आजादी? कैसी आजादी की वर्षगांठ? नादान बच्चों की किलकारियां धीमी पड़ गई हैं, उनके उछल–कूद, धमा–चौकड़ी के दायरे सीमित हो गए हैं। इस पर रचनाकार 'अज्ञेय' का चिन्तन दृष्टव्य है–''वे आंगन में खड़े होकर आकाश देखने लगे। आजाद देश का आकाश। और नीचे से, अभ्यर्थना में–जलते घरों का धुआ। धूपने धाययामः। लाल चन्दन– रक्त चन्दन................।''9

अज्ञेय की कहानियों में कुछ मूल्य सहज प्रवृत्ति के रूप में मानव जीवन के नैसर्गिक स्वभाव में आतें हैं। कुछ मूल्य ऐसे भी हैं, जो रचनाकार के विचार साधना में पलते रहते हैं और परिपक्व होकर शब्द रूप में प्रकट होते हैं। ये लेखक की संकल्पना के मूल्य होते हैं, जिनसे वह एक इच्छित व्यक्तित्व, अभिलसित संसार और कल्पना जगत का व्यक्तित्व पुंज गढ़ता है ऐसे मूल्य मानव और मानवता के लिए प्रेरणास्पद होते हैं। उनकी समस्त कहानियों में स्वानुभूति है, जिसमें रचनाकार अपनी आत्मा उड़ेलकर रख देता है। जो उद्गार रचनाकार के अन्तर की गहराई से आते हैं, वे पाठक के हृदय में उतनी ही गहराई बनाते हैं। अज्ञेय की कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि कहानी लिखने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि मनुष्य अपने जीवन को इस ढ़ंग से बनाने का प्रयत्न करे कि दूसरे लोग उसकी जीवन कहानी को बड़े चाव के साथ देखें और पढ़ें। जो कहानी लिखते हैं और साथ ही अपने जीवन को कहानीमय बना सकते हैं, ऐसे रचनाकार हिन्दी जगत में विरले हैं।

संदर्भ :

1. अज्ञेय–सम्पूर्ण कहानियां सेव और देव, पृ. 383.

2. वही, कैसाड्रा का अभिशाप, पृ. 396.

3. अज्ञेय, 'आत्मपदेन'।

4. अरस्तू।

5. अज्ञेय, सम्पूर्ण कहानिया, पृ. 473.

6. वही, पगोड़ा वृक्ष, पृ. 314.

7. वही, शत्रु, पृ. 256.

8. वही, हरसिगार, पृ. 246.

9. वही, पृ. 485.